

खेल पत्रकारिता के सशक्त हस्ताक्षर श्री पद्मपति शर्मा

डॉ. चंद्रशेखर पांडेय*

हिंदी खेल पत्रकारिता से नाता रखने वाले सशक्त हस्ताक्षरों में श्री पद्मपति शर्मा का नाम प्रतिष्ठित पत्रकारों में पंक्तिबद्ध है। जनमानस के बीच अपनी कलमकारी से खेल (विशेषतः क्रिकेट, हॉकी, लॉन टेनिस) के प्रति जनचेतना जगाने वालों की प्रथम पंक्ति में आप समादृत हैं।

ख्याति प्राप्त समाचार पत्र आज से आपने अपने हुनर से क्रीड़ा जगत में अपने लेखन का प्रारंभ करते हुए लोगों को अपनी लेखनी की ओर आकर्षित कराया था। बाद के दिनों में प्रतिष्ठित हिंदी अखबार दैनिक जागरण तथा अमर उजाला से भी आपने अपना संबंध स्थापित कर लिया था। रेडियो पर क्रिकेट खेल के आँखों देखा हाल का ज़माना भी अपने चरमोत्कर्ष पर था। सब्जी वाले अपने ठेले पर रेडियो, ट्रांजिस्टर लिए चलते थे। दुकानों पर रेडियो सुनने का प्रचलन था। लोग जिज्ञासु होकर मैचों का हाल जानने के लिए बेताब रहते थे। चलते राहगीर सड़क पर खड़े होकर खेल की स्थिति जानने के लिए उत्सुक रहते थे। ऐसे समय में भी शर्माजी ने खेल के मैदान से आँखों देखा खेल विवरण जनता के बीच फैलाया। अखबारों में आपकी कलात्मक शैली के समाचार पढ़ने के लिए या तो लोग घर लालायित रहते थे या चाय, पान की दुकानों पर। टेलीविजन की परंपरा प्रारंभ होने के पश्चात् भी खेल समाचार पढ़ने वाले की संख्या घटी नहीं। वह आज भी बरकरार है। इसका श्रेय शर्मा जी को जाता है।

क्रिकेट, हॉकी के प्रति रुचि जगाने में श्री पद्मपति शर्मा जैसे प्रतिभावान व्यक्तित्व की भूमिका कभी भी बिसराई नहीं जा सकती है। आपने अपने इस कार्यकुशलता को देश-विदेश तक फैलाया। खेल के प्रति लगाव रखने वाले लोगों के दिलों में आपने क्रिकेट एवं हॉकी से जुड़ी कलमकारी का लोहा मनवाया।

कुशल लेखक शर्माजी ने क्रिकेट, हॉकी, लॉन टेनिस से जुड़ी शब्दावलियों को खेल समाचार माध्यमों से सजाया-संवारा। आपकी भाषा सरल, सुबोध एवं सरस

* असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता विभाग, जगतपुर पीजी कॉलेज, वाराणसी।



रहती थी। आपने खेल पत्रकारिता के स्तर को ऊँचाइयाँ दीं। हिंदी का सम्मान बढ़ाया। पत्रकारिता जगत से संबंध रखने वाले महान विभूतियों ने भी शर्मा जी के लेखनीय गुणों की सराहना की है। बानगी स्वरूप महत्वपूर्ण विद्वानों के कथन वंदनीय हैं

हिंदी पत्रकारिता के युग पुरुष, पूर्व कुलपति माखनलाल विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश के विद्वान श्री अच्युतानंद मिश्र जी की दृष्टि में पद्मपति शर्मा ने खेल पत्रकारिता से जुड़े तकनीकी पक्षों पर विशेष प्रकाश डाला है।

पत्रकारिता एवं जनसंचार से जुड़े रचनात्मक व्यक्तित्व के धनी कलमकार (पूर्व उप कुलपति केंद्रीय विद्यालय सिलचर (असम) डॉक्टर ज्ञान प्रकाश पांडेय के अनुसार श्री पद्मपति शर्मा जी ने 80 के दशक में वाराणसी के सम्मानित अखबार आज दैनिक से खेल समाचार की शुरुआत की। दैनिक जागरण एवं अमर उजाला की सेवा करते हुए आपने खेल समाचार का इतिहास रचा। अपनी प्रतिभा का परचम लहराया। सुनील गावस्कर एवं जैसे नामी-गिरामी खिलाड़ी आपसे फोन पर बातें करते थे। यह उनका जलवा था। कई विदेशी खिलाड़ियों से भी आपके अच्छे संबंध थे। शर्माजी सहृदय हैं। उनसे अपार स्नेह मिला है। उन्हें यह भी याद रहता है कि किस क्रिकेट खिलाड़ी ने किस मैच में कितने रन बनाए। मैं उन्हें खेल पत्रकारिता का इनसाइक्लोपीडिया

खेल पत्रकारिता के सशक्त हस्ताक्षर श्री पद्मपति शर्मा

मानता हूँ।

पत्रकारिता के महान पुरुष प्रोफेसर संजीव भनावत जी का कहना है कि शर्माजी खेल पत्रकारिता में शब्दों की धड़कन हैं। आपने क्रिकेट सहित अनेक अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों से जुड़े खेल समाचारों की रिपोर्टिंग की है। आपने खेल पत्रकारिता की दुनिया को बहुत करीब से देखा है।

आजतक टेलीविजन से जुड़े प्रतिभावान व्यक्तित्व के धनी जनाब कदम वहीद नकवी श्री पद्मपति शर्मा को खेल जगत का इकलौता द्रोणाचार्य कहते हैं। क्रिकेट प्रेमी महामहिम युग पुरुष राजा रंगिपुर भी आपके विशेष प्रशंसक हैं। आपने शर्मा जी के समाचार लेखन कला का विशेष गुणगान किया है। आपकी लेखनी ने बताया है कि क्रिकेट खिलाड़ी विश्वनाथ के कलाई में ऐसा जादू था जो उन्हें विशेष बनाया।

पत्रकारिता के अनूठे शब्दकार श्री हेमंत शर्मा जी ने भी आपके खेल लेखन की तारीफ की है। आपके अनुसार पद्मपति शर्मा लोकमत, सन्मार्ग, विश्वामित्र (कोलकाता) व राजस्थान पत्रिका के भी स्तंभकार रहे हैं।

हिंदी खेल पत्रकारिता के सुप्रसिद्ध लेखक की कुशल लेखनी ने एक पुस्तक का रचाव भी किया है, जिसका नाम है अंतहीन यात्रा। इस कृति के अंतर्गत आपके खेल जगत से जुड़े सुहाने सफर के अनुभव एवं खेल पत्रकारिता की अंतर्दृष्टि पर रेखांकन हुआ है।

निष्कर्ष के रूप में मैं यही कहूँगा कि श्री पद्मपति शर्मा खेल पत्रकारिता के युग पुरुष हैं। जिन्होंने अपने खेल समाचार से खेल जगत के क्रिकेट, हॉकी, लॉन टेनिस के प्रति जनमानस में संचेतना जगाई। अखबारों में खेल जगत को विशिष्ट स्थान दिलवाया। खेल की समाचार शब्दावली को व्याकरण प्रदान किया। खेलों की महत्ता दर्शायी जिससे समाज में सहयोग, साहचर्य बढ़ा। दैनिक जागरण पत्रों में खेल चर्चा के चलते खेलों के प्रति जनता का विशेष आकर्षण बढ़ा। फलतः आज विभिन्न प्रतिष्ठानों में खिलाड़ियों को रोजगार के अवसर भी मिल रहे हैं। भारतवर्ष की देश-विदेश में खेलों के माध्यम से कीर्ति भी फैल रही है।

□□